

ॐ

मोग-चीले मन्दिरा ० कानने सावना

ASIAN ARCHIVES

792

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

११
रहसि श्री गुरु नमः ॥ अथ कुरु भयं ता विधि निरुद्धं ॥
यजमानयस्य लोडनयचक ॥ अथादिवाक् ॥ सूर्यार्घ्य ॥
अखं नुमं नुलाकारं त्यादि ॥ गुननमस्तु नमः ॥ ॥ नमः ॥
ॐ ईं सः अस्माय नमः ॥ ॐ ईं सः अस्माय नमः ॥ ॐ ईं सः नमः
नमः ॥ ॐ ईं सः मय नमः ॥ ॐ ईं सः अनामिकाय न
मः ॥ ॐ ईं सः कनिष्ठिकाय नमः ॥ ॐ ईं सः अस्माय नमः ॥

ॐ ईं सः हृदयाय नमः ॥ ॐ ईं सः शिरसाय नमः ॥ ॐ ईं सः शि
खाय नमः ॥ ॐ ईं सः कवचाय नमः ॥ ॐ ईं सः नयनय नमः ॥
॥ ॐ ईं सः अस्माय नमः ॥ ॥ ॐ ईं सः अनामिकाय नमः ॥ य
त्पूज्यं वायुर्वयक्राय नमः ॥ नमः अथा नमः दक्षिणवक्राय नमः ॥
वैद्यं मधवाय नमः ॥ ॐ ईं सः अनामिकाय नमः ॥ ॐ ईं सः अनामिकाय नमः ॥
यक्राय नमः ॥ ॐ ईं सः अनामिकाय नमः ॥ ॐ ईं सः अनामिकाय नमः ॥

नमः ४७ ॥ अर्घ्यं यागपूजा ॥ ॐ ह्रीं सः हृदयाय नमः त्यादिषु
लग्नसंयुजा ॥ **आवाहनाय नमः ॥** ॥ **अथ आवाहनाय** ॥ यद्विष्णु
सर्वमथाकी सर्ववन्मुनिर्हिय ॥ यद्विष्णु आत्मया की च धर्मदा निः
प्रसिचय ॥ आत्मनर्हिय ॥ आत्मन च च न नमः ॥ आत्मन पूष्य
नमः ॥ आत्मा सनाय नमः ॥ अथ न आत्मयुजा ॥ **अथ दान**
पूजा ॥ ॐ नदिने नमः ॥ ॐ हृदिने नमः ॥ ॐ गनयनय नमः

॥ ॐ गुरुत्वा नमः ॥ ॐ द्रव्याय नमः ॥ ॐ लग्नवक्राय नमः
॥ ॐ वनाहवक्राय नमः ॥ ॐ हयवक्राय नमः ॥ ॐ सिंहवक्रा
य नमः ॥ **अथ न दानपूजा ॥** अथ सनयुजा ॥ ॐ ह्रीं सः आधाम
भक्त नमः ॥ ॐ अनासनाय नमः ॥ ॐ यद्वा सनाय नमः ॥ ॐ
कसनाय नमः ॥ ॐ कर्त्तृकाय नमः ॥ ॐ यद्वाय नमः ॥ ॐ गुरु
सनाय नमः ॥ ॐ निरुक्ता सनाय नमः ॥ ॥ अथ ध्यान ॥ ॐ ह्रीं

५
दिकसंकासं त्रिनयनं नमो नित्यं । यत्र दारुणं रुसं च मूढा माला
नहनं ॥ एवम् आत्मा महादेवं ॐ स्वकामार्थसिद्धये ॥ ॐ तिः
आनयय नमः ॥ ॐ ईं स ॐ ह्यं उ या यश्च मृती श्वरा यमहाः
लक्ष्मी शक्ति सहिताय नमः ॥ ॐ वृषरा सनाय ॥ ॐ गङ्गाय ॥
ॐ उमनाय ॥ ॐ निर्मलाय ॥ ॐ कावेरी ॥ ॐ गङ्गाय ॥
ॐ वाग्मये ॥ ॐ संपूर्णकलसाय नमः ॥ ॐ ईं स ॐ ह्यं उ

य नमः ॥ ॐ ईं अजय नमः ॥ ॐ ईं यमाय नमः ॥ ॐ ईं नेत्रायाः
य नमः ॥ ॐ ईं वरुणाय नमः ॥ ॐ ईं वायुवाय नमः ॥ ॐ ईं कूर्वा
नाय नमः ॥ ॐ ईं ॐ शिवाय नमः ॥ ॐ ईं अनकाय नमः ॥
ॐ ईं वज्राय नमः ॥ **थनं नवल्लि ॥** ॥ ॐ अल्लुमाय नमः ॥
ॐ वल्लय नमः ॥ ॐ आसाय नमः ॥ ॐ हनुमते ॥ ॐ विहिबना
य ॥ ॐ हयाय ॥ ॐ यनशुनामाय ॥ ॐ मार्कटाय नमः ॥ **थनं**

नमः॥ ॐ ह्रस्व उद्वा नाय २॥ ॐ माऊ ल्यद्वा नाय २॥ ॐ चतुर्द्वा ना
य २॥ **थननं वलि** ॥ ॐ दौं कौं ईं के गुया लाय नमः॥ ॐ ह्रस्वः
इ गाय २॥ ॐ ऐं ना इ गाय २॥ ॐ दान इ गाय २॥ ॐ कलि इ गाय २॥
ॐ चतुर्द्वा गाय नमः॥ **थननं वलि** ॥ ॥ ॐ सुग वेदाय नमः॥ ॐ
इ इ वेदाय २॥ साम वेदाय २॥ ॐ अथ वेदाय २॥ ॐ चतुर् वेदा
य नमः॥ ॐ जीव दी य त्या नमः॥ ॐ साक दि य त्या नमः॥ ॐ

कृष्णदीपस्थानमः॥ॐ सुखदीपस्थानमः॥युक्कननिदीपस्थान
मः॥ॐ सुखदीपस्थानमः॥**अननवलि॥** ॥ॐ खानसागने
स्थानमः॥ॐ क्षीनसागने **स्था २**॥ॐ सुखिसागने **स्था २**॥ॐ दधिसा
गने **स्था २**॥ॐ वृक्षसागने **स्था २**॥ॐ मेदिनसागने **स्था २**॥ॐ स्वा
दसागने **स्था २**॥ॐ सुखसागने **स्था २**॥**अननवलि॥** ॥ॐ नना
यनमः॥ॐ नितलाय **२**॥ॐ सुनलाय **२**॥ॐ वितलाय **२**॥ॐ नलानलाय

२॥ॐ यागलाय **२**॥ॐ नसानलाय **२**॥ॐ सुखपागलाय नमः॥**अ**
ननवलि॥ ॥ॐ ईनलाकायनमः॥ॐ नयलाकाय **२**॥महल्लोक
य **२**॥ॐ सुवलाकाय **२**॥ॐ स्वलाकाय **२**॥ॐ सुखलाकाय **२**॥ॐ
सुखलाकाय **२**॥**अननवलि॥** ॥ॐ वसुकायनमः॥ॐ गाथाय
२॥ॐ वषाय **२**॥ॐ अत्र **२**॥ॐ हसनाय **२**॥ॐ जिजिनायनमः॥
अननवलि॥ ॥ॐ जयारवायनमः॥ॐ पुवाय **२**॥ॐ सामाय **२**॥

॥ अथ नमो वलि ॥ ॐ अग्निना नमः ॥ ॐ हनना ॥ ॐ रुद्रिकाये ॥
ॐ नाहिनी ॥ ॐ मृगसिनाये ॥ ॐ आत्राये ॥ ॐ यूनवर्षा ॥ ॐ
यूषा ॥ ॐ अम्बाये ॥ ॐ मद्याये ॥ ॐ पूर्वरात्रालि ॥ ॐ उग्रस
लुम्बे ॥ ॐ हस्ताये ॥ ॐ विनाये ॥ ॐ ह्याये ॥ ॐ विष्णवाये ॥
ॐ अननायाये ॥ ॐ अक्षाये ॥ ॐ मूलाये ॥ ॐ पूर्वार्द्राये ॥
ॐ उलनायाये ॥ ॐ अतिजिते ॥ ॐ श्वनाये ॥ ॐ धनशाय

॥ ॐ अतहिवाये ॥ ॐ पूर्वार्द्राये ॥ ॐ उग्रार्द्राये ॥ ॐ
नवमे ॥ अथ नमो वलि ॥ ॐ विष्णवाय नमः ॥ पाति नमः ॥ ॐ
आयूषाये ॥ ॐ सोराग्ये ॥ ॐ अहने ॥ ॐ अतिगालुये
॥ ॐ सुकम्पये ॥ ॐ ध्रुवे ॥ ॐ मूलाये ॥ ॐ गालुये ॥ ॐ द
क्षि ॥ ॐ ध्रुवे ॥ ॐ वायानाये ॥ ॐ ह्याये ॥ ॐ वज्राये ॥ ॐ
मूलाये ॥ ॐ अनियाताये ॥ ॐ वलिमाये ॥ ॐ अनियाये ॥ ॐ मि

ॐ वृषाय २॥ ॐ मिथूनाय २॥ ॐ कर्कशाय २॥ ॐ सिंहाय २॥ ॐ क
न्याय २॥ ॐ तुलाय २॥ ॐ विष्णवे २॥ ॐ मकराय २॥
ॐ कुलाय २॥ ॐ मित्राय नमः॥ **थम नवलि** ॥ ॐ वज्रिच्छादि सफः
पवित्राय नमः॥ ॐ शुक्राय नमः॥ ॐ नक्षत्राय नमः॥ ॐ कलि
काय २॥ ॐ कर्कशकाय २॥ ॐ श्रीस्ये लाय २॥ ॐ यद्राय २॥
ॐ महायद्राय नमः॥ ॐ श्रीनमः॥ ॐ विद्याय नमः॥ ॐ निविद्येन

ॐ ॥ **न तावत्प्रावृत्तं** ॥ यत्तु मानसं व्यलङ्घय चकं ॥ **वा** ॥
यत्तु मानसं गृहं युगिष्य वत्प्रावृत्तं निमित्तं र्थं पूष्य लङ्घनं सम्य
यामि ॥ **आर्षवत्** ॥ पूर्वदिक् नयन्मि ॥ सिद्धिं न मु। यथा वा न
प्रहाना नां र्थादि ॥ पूष्य लङ्घनं समर्थयामि ॥ **आव** ॥ ॥ यत्तु सः
मर्त्तु सनाया चकं ॥ **हान** ॥ यत्तु मर्त्तु न धनं कस्मिन् अलिप्तानाया च
कं ॥ **चन्दन** ॥ आर्षवत् चन्दनं दिव्यमित्यादि ॥ **सिद्ध** ॥ वीरः

अत्रा मर्त्तु वीरं र्थादि ॥ **दृक्** ॥ लङ्घनं च द्रुविष्णु लङ्घनं र्थादि
॥ **उत्तमका** ॥ यत्तु य विर्गयनं य विग्रमित्यादि ॥ **अद्वा** ॥ नाना
वद्रुपि विग्रहमित्यादि ॥ **अकगद्गुरु** ॥ द्रुविक्रान्तं समर्थमित्यादि
॥ **हान** ॥ नाना पूष्यसूगं यथा र्थादि ॥ **कर्त्तु यत्तु** ॥ कर्त्तु यत्तु
दयार्थं र्थादि ॥ **यत्तु यत्तु** ॥ यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु र्थादि ॥ ॥
वयमर्त्तु ॥ द्रुविक्रान्तं र्थादि ॥ **अद्वा** ॥ अद्वा मर्त्तु

दिद्यमीत्यादि॥ ॥ **नेव द्यनय** ॥ नेव द्य गृह्णन् द्य द्यत्यादि॥ ॥
॥ **अद्यादिवाक** ॥ सूर्याद्य ॥ ॥ **गुवनमस्तु** ॥ अखन्दमदलाः
कात्रमित्यादि॥ ॥ वनाग्निन्यासः ॥ ॥ **ऊलपात्र** ॥ अर्घ्यपात्रयूत्र ॥
हस्तसूदि आत्मयूत्र ॥ तर्कज ३ ॥ ॥ **मालिनिय ८०** ॥ यश्च
लिविश ॥ **जय स्तुत** ॥ गोमया पूज्यं ॥ त्यादि ॥ **आसमस्तु** ॥ आवाह
न ॥ सिद्धय ॥ वलि ॥ आगिनि ॥ वलि ॥ आवाहनादिसुखसुखा ॥ **आस**

न ॥ आवाहनादिसुखसुखा ॥ ॥ **यथा देवस्यासन** ॥ अस्मद्वदवः
सुखार्न ॥ **प्रिया पूरुलि** ॥ षष्ठं ग ६ ॥ वलि ॥ आनिमूत्रा ॥ ॥ **रूद्रादि**
॥ वलि ॥ ऊमादि ६ ॥ वलि ॥ वृक्षा न्यादि ६ ॥ **यथा देवलि** ॥ वृक्षा ॥ रुका
नस्तुकात्र ॥ **यथा देवलि** ॥ यथा देवस्य गिर्या पूरुलि ३ ॥ वलि ॥ आ
वाहनादिसुखसुखा ॥ **यथा देवलि** ॥ ॥ **आसमस्तु** ॥ आवाह
न ॥ सिद्धय ॥ वलि ॥ आसन ॥ आगिनि ॥ वलि ॥ आवाहनदि

सहस्रदा ॥ ॥ आध्वन्य कथयति ६ ॥ यथादवस्था न
सन ॥ ॥ अमकदवस्थानीया लिङ्ग ॥ षडङ्गावलि
॥ शानिमदा ॥ ॥ ॥ रुद्रकादि १० ॥ यन्ननवलि ४ ॥
अभिगाथादि ६ ॥ यन्ननवलि ४ ॥ यथागमदि ६ ॥ यन्ननवलि ४ ॥
अध्वानसकान ॥ यन्ननवलि ४ ॥

मीवलीगीपाएलनं पावतीवीजलनकोभाविदे
गिधसजुयेफुअवलेज्ज। गिइमृदस्वयेमाता

आम काद

792

ASHA ARCHIVES

१०४

१३३

१५०

१२१

१२८

११७

११९

११९

१०

१०

१०

१०

१०

१०

२ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री दक्षिणाकान्तिकायै नमः ॥ ॥
ॐ ॐ ॐ हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणाकान्तिके ॐ ॐ ॐ हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा
भुवि जायामहापिशाचिनि दुष्ट जनचिन्तचमत्कारिणि ॐ
कामेश्वरि वीवाराहिके ह्रीं महामाये रवंश्व क्रोधाधिपे श्री
महानक्ष्मी सर्वहृदयरञ्जिनि वाग्वादिनि विद्ये त्रिपुरे
स्त्रीं हंसकलशे स्त्रीं ॐ ह्रीं ॐ ॐ स्वाहा दक्षिणाकान्ति

के ह्रीं हूं ह्रीं स्वाहा. खड्ग मुराड धरे. कुरुकु लोतारे. ॐ ह्रीं नमः
अयोत्मादिनि. अयं. मम. हत २ पच २ मथ २ प्रे वि मोहिनि.
सर्वदुष्टान्. विमोहय २ ग्रीवे. सिंहनादिनि. सिंहस्थे. अश्व
रुटे. अश्वमुखि. विद्राविशि. विद्रावय २ मम. शत्रून्. ये.
मां. हिं सितु मुद्रता. स्तां. स्तान्. ग्रस २ महानीति. वनाकि
नि. नील पताके. केँ केँ केँ कामेश क्षोत्रिणि. उच्छि

ह चारुडालिके. सर्वजगद्गश मातङ्गिनि. उच्छिष्टरुचा
राडालिनि मातङ्गि. नि. सर्ववशङ्क. करि. तमः स्वाहा.
विस्फुरिणि. कपालधरे. धीरे. धीरनाशिनि. सुर
शत्रु विनाशिनि. उन्मादिनि. ऐँ ऐँ ऐँ श्रीं ह्रीं मीं. व
द २ कीं कीं कीं कीं कीं कीं. कति २ स्वाहा. काहि २ का
निके. शम्बर घातिनि. कामेश्वरि. कामिके. ह्रीं ह्रीं कीं

कीं स्वाहा. हृदया हूये. ॐ ह्रीं कीं मे स्वाहा. ठः ठः ठः कीं
ह्रीं हूँ चामुण्डा. हृदय नाभिभव. असुवन ग्रस दुष्ट जना
नृ. भून्. शङ्खिनीक्षत चर्चितस्तने. उन्नत स्तनविष्टं भ
कारिशि. विद्याधिके व्रमशानवाशिनि. कलय २ विक
लय २ कालग्राहिके सिंहिके दक्षिणकालिके. अनि
रुद्रायै. ब्रूहि २ जगाद्धि तत्र चमत्कारिण ब्रूँ कारिशि

हूँ कालिके. कालिके धार. कह २ तडागेतो गहने.
कानने शत्रुपक्षे समो रिमर्दिनि. पाहि २ अम्बिके.
तुभ्यं कलविकलायै. बलप्रमथनायै. योगमार्ग. नि
यच्छ २ निदर्शिके. देहि. निदर्शने देहि. मर्दिनि च
तमर्दिनि ह्रीं महिषमर्दिन्यै स्वाहा. रिपून् ददर्शने. द
र्शय २ सिद्धिं कुरु २ परप्र प्रवेशिनि. वीरवारिशि.

कीं कीं कीं हीं हीं हूं हूं दक्षिणा कालिके कीं कीं कीं हीं हीं
हूं हूं फटस्वाहा. शक्ति रूपायै. ऐं वासुदेवायै. ऐं ऐं ऐं
ह्रीं. यामोहिनि. यन्त्रनिके. महाकालिकायै. प्रकट दश
नायै लोलजिह्वायै. मुण्डमालिन्यै. महाकालरसिका
यै. नमो २ प्रह्लादभेदिन्यै नमो नमः शत्रुविग्रह कल
त्रपुत्र भोगिन्यै. विषज्वाला मालिनि मन्त्रनिकतनि.

मेघप्रभे. शवावतंसै. हंसिके. कालिकपालि. कुल्लो
करुकुल्लो. चेतन्यप्रभे. प्रज्ञानसाध्या शानदे.
ह्रीं ह्रीं सः ज्वालाप्रचण्डचण्डिके. खखोल्के. मा
तृण्ड भैरव विप्रचित्रिके. विंशे धिनि. आकष
रपिंसिने. विस्मित प्रिये. बलिप्रिये नमो नमः

रविव प्रदय २ शत्रुन हन २ ठः ठः ठः कालि
के नमोनमो. ब्रह्मरौप नमो २ नारायणै नमो २
माहेश्वर्यै नमोनमः. चामुण्डायै नमोनमः. कोमा
र्यै नमोनमः. रत्नपराजितायै नमो २ नारसिंहिका
यै नमोनमः. कालिक. महाकालिक. अनिरुद्रिक
सरस्वति फट्स्वाहा. पाहि २ ललार् लला

टिनि. असृक्क लेलीव वहे. वान्च. रक्ष २ पर
विद्या. शोभय २ आकर्षय २ चूट २ महामायि
के. विवरसिद्धिके. कृष्णरूपिणि. अंजन सि
द्धिके. स्तंभिनि. मोहिनि. मोक्षमार्ग. निदश्य
२ स्वाहा. ॥ ॥ इति श्री गोरियामने कालि स
हस्राक्षरी मन्त्रः शुभः ॥ ॥ श्रीवामशुद्धो
क्षप्रता परमेश्वरिः ॥ विसम्बत् १९९४ साल पा

अहम् इति या रविवार शुभं ॥ लेखक सिद्धि नर्सि
कर्माचार्य कोनाति रवकु नर्सि कर्माचार्य को छो
रा श्रीदर भैरवलाल कर्माचार्य भक्तपूरन
गरविद्यापीठ कर्माचार्य

पुलांग चोयात वग भवत नैलेया फयागुथ १९९५ साल स.
अथयन्त्र प्रकरण ॥ मन्त्र चोये सफुलिस थुगुलि बुलभालये ॥
हर्नमालजा भूजपत्रे चोये ॥ ॥ चतुस्मन चोये ॥ थुगुलि ज
गत जुलो ॥ ॐ कारन धा १०८ जपलये थुलि जीवत जुलो ॥ यं
धकं अक्षतन पूजायाड कूसतंगाले धा १०८ थुगुलि ताडन
जुलो ॥ रं धक धा १०८ धूपथडन व प्रायचिन्न फुतके थुगुलि
बोधत धाये ॥ वं धक १०८ साडुडुन गुलतोथनाव आभिषे

कयाये थुगलि आभिषेक जुल ॥ हँस हँर. ध्वमन्त्रन आरव ल
गोलपति वलगत हलनं लंखनं हायेधकं. स्वानया लीषन हाये
थुगली आप्याय नजुलो ॥ लँ धकं धा १०८ ध्वमन्त्रनं सुरामी
स तर्पणायये. थुगलि तर्पणन जुलो ॥ ऐँ. ह्रीँ श्रीँ ध्वमन्त्रन.
धाल १०८ गंगाजलनं हाये थुगलि दीपन जुलो ॥ थुगलि मं
त्रनं धाल १००८ जपयाये. थुगलि गुप्ति जुलो ॥ थुति मं

त्रया दश संस्कार जुलो ॥ थुतियाय धुनकाव पूजा जोलामद
यकाय या जुलं शक्तिदेवी पीठ इत्यादि सबकाव विधिथ्ये
नवात्मार्थ पूजायाये विसेष न्यास ॥ ॐ विद्युजिह्वे
स्वाहा ॥ हृदि ॥ ॐ ज्वाला मुखि स्वाहा ॥ शिर ॥ ॐ श्रीं
श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ नेत्रे ॥ ॐ श्रीं स्वाहा ॥ अन्त्र ॥ अङ्गुली
क्रमनं ॥ ऐँ पद्मासनाय नमः ॥ ऐँ सवासनाय नमः ॥ ऐँ म
न्त्रा सनाय नमः ॥ त्रियांजलि ३ ॥ ॐ ऐँ तमः विद्युजिह्वे

ज्वल २ ज्वाला मुखि हाँ हाँ हाँ हाँ हूँ हूँ श्रुं श्रुं हूँ हूँ फूँ
स्वाहा श्री परं ब्रह्मात्मने श्री पादुकां पूजयामी नमः ॥ वलि ॥
त्रिशूल. काष्ठ. खड्ग. अंकुश. पद्म. शंख. वराभय मुद्रा क्रम
आदिनं निवारिणा त्वं पूजायाये ॥ ॥ परिषार पूजायाये ॥ अ-
सितांगादि ॥ ब्रह्मान्यादि ॥ जयादि ॥ रुद्रचराडादि ॥ इन्द्रा-
दि ॥ धामानुकादि ॥ पूजा ॥ वलि मोले ॥ चननादि दीपा

नं पूजा ॥ धूपदीपनैवेद्य ॥ प्रतिष्ठा ॥ सगन मोहनी माल
पूजायाय बाली मौले न हाजुलो ॥ जापात्रिदेवादि क्रमनं मू
लनं ॥ कर्मादि मालके पाये ॥ स्तोत्र ॥ विलेखस्तोत्र ॐ
क्रा काशोति ॥ पशुतर्पण ॥ बोकन छाये ॥ सगन मोहनी मध्या
संधाल १०८ महाभैरव मंत्रजपलये सफुलिस ॥ यै १२ रं
१२ वं १२ लं १२ हं १२ ध्वनं जपलये गुल ॥ ॥ सगन मोहनी
छाये ॥ देव्यासिर्वाद ॥ धम अमिसेक चन्दनपूष्पका

ये ॥ सम्यक्काय ॥ त्पासयाय थवगुलिनं ॥ वलिथय ॥
 हनंदेवयाके चोड. स्थानकायाव त्पाचोयागुलि मन्त्रानवा
 ल १०० जपत्तपाव थमंछुये आचमन ॥ साधि आय ॥
 भोज्यफलकान्तं ॥ ॥ इति मन्त्रासिद्धि दशसंस्कार प्रक
 रण समाप्तं ॥ ॥ ज्वालादि विष्कार ॥ सान्निभं पुष्टि
 कंचैव शुक्ल पक्षे तु कारयेत् ॥ वदपा भिन्धार कर्मादि ह्म
 ह्म पक्षे समारभेत् उत्तराभि मरुपी शान्ति पुष्टिकं प्रा

इ. मुखंतथा ॥ दक्षिणे रौद्र कर्माणि वस्पाक वर्णा पद्धि
 मे. आग्नेया मारणांचैव नैऋत्या द्वेधरा ह्मया ॥ स्थान
 चारणा वायव्यां दशान्यां स्तंभनं भवे ॥ सान्निभं शुक्ल
 वरांति पीतवरांति पुनिके ॥ वदपा कर्षणा यो रक्तं ह्म
 ह्म वरांति मारणे ॥ ॥ शान्तिके मेघचिन्तेन हर्षचिन्ते
 न पौष्टिकं रागाचिन्तेन वैदपन्त क्रोधाचिन्तेन मारणं ॥

प्रदोषे शान्तिकं कृत्यं प्रत्यूषे पौष्टिकं तथा ॥ विदुषा
अभिचारकर्म मध्याह्ने चार्द्र रात्रिके ॥ ॥
अथ यन्त्र धने विधि ॥ त्रिरात्र्यम् ॥ न्यास यत्र गुलितं याये
॥ भुजपत्र कायाव चतुस स्कार याये ॥ हुँ अस्त्राय फट् ई
त्यादि चतुस्मादि न गुगुलि न चोय जुल उगुलितं सस्कार
याये माल ॥ चोये माल गुलि चोय चोये धन काव मोस पा
ने गुगुलि ऊँ पाने ॥ प्रत्यं गिरा वोडा व कुं फ ये जुल ॥

शान्ति धूल काव इलाका प्रका भुस्यात अक्षत गव ५ शु
ति दुधने माल मन्त्र ॥ ॐ यन्त्र रजाय विद्महे महायं
त्राय धीमहि तन्नो यन्त्र प्रचोदयात् ॥ ॐ ह्रीं ॐ
श्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं कृत्स्वाहा ॥ ॐ श्रीं को
मारी विद्महे फट् ॥ कानहिने ॥ गंगाद्या सवु लिलं
इत्यादि नैवेद्यं तय गुलितो लोध याये माल गुलितो
पाय गुगुलि धसे तये ॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्रीं स्वाहा ॥ हनं ॥

ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि तन्नो यन्त्र प्रचोदयात् ॥ मं
 त्रध्वजुक्तो ॥ हनं गुगुलिमात उगुलिनाम हीलके पाद्यादि तये ॥ धू
 पदीपनैविद्यः ॥ त्रियाञ्जलि ३ ॥ ऐं स्नाने काये नमः सीतिसः ॥
 ॐ पुष्टिकाये नमः पुष्टिसः ॥ कीं वलीकरां स्वाहा ॥ वदये ॥ ॐ
 ऐं प्रं हं स्वाहा ॥ मरुयाफया ॥ ॐ हं वद २ धीं धीं स्वाहा ॥
 भूतप्रेत पिशाचन राक्षसन पुड्या ॥ ॐ हं सः सोहं स्वाहा ॥

देवदूषनया ॥ ॐ मेँ भीं भीं स्वाहा ॥ यक्षनागादि दोषया ॥
 ॐ मेँ मेँ मेँ ॐ ऐं स्वाहा ॥ दृक् रोगदोषमूत्रं तु य
 के फकोयां ध्वजुक्त ॥ ॥ गुगुमात
 उगुलीनं जपयाये ॥ लोत्र ॥ नमस्ते चक्रवन्तीने नमस्ते दुः
 खनाशिनी सर्वसिद्धि प्रदेदेयी यन्त्रस्थायी नमोनमः ॥
 धालि यन्त्र दयके विधि जुलो ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लृं क्लौं ॐ ह्रीं चन्द्रावरि श्रीरवर परिनिवासिनि ॐ ऐं चूं आक
 र्कश्री श्रीशिवशक्ति हयाकारः अभिनासेरसमाकुली ॐ ऐं श्री श्री कुडिका क्रौं
 तमामि प्रभु श्री भैरवनाथ भदरक ॐ जीव रक्षासव ग्रहप्रतिवारि व्याधिग्रह
 स्वाहा हूं ॥ धाल ५ जपे ध्वमन्त्रन कुमारीसूत्र तं ५ गलसकोखायके दकोदोवरो
 गसान्ति शोरेयाय जिवः सकतासं जिवजुलो ॥ ॐ क्षौं ॐ आं वन्ति नरसिंहवी
 र २ दहने ज्वाली भूतवन्धि प्रेतवन्धी तृभावन्धी जलनावन्धी हस्ते संरषचक्र ग
 दापद्म मारंगधारि वन्धी वायुसंक्षयपालवन्धी अक्ष भैरववन्धी अष्टमानिका

वन्धी दृष्टिवन्धी प्रस्तिवन्धी उदगचेत्रारे फूलवन्धी रक्ष २ नरसिंहवीर हों हूं
 फट् स्वाहा ॥ धाल ३ ध्वमन्त्रन लंरवजपाव तोनके शोरेयाये ध्वजुलो अने फजुव
 संजिवजुलः हनं कुमारिसूत्र तुष्ट ग्रथिं ८ जपलेपे धाल ६ धुगुलि रक्षानं कोखा
 यके समस्तयार क्षाजुल ॥ शोरेयायेता बलि छपाततयाव याय धूपधाने मालः
 धूप हलसुखापाः हिङ्गु बिल्वपत्रः ईकाः पलकाः भुस्वाः फोसिखोला जपापु
 जटाभासः गुगुलिः धूपप्रतिजुलः धूपयानामः अभितासिक ॥ ॥ ॥

ॐ

कोरव्याचरीत्र

काकचरित्रं प्रवक्ष्यामीशुभाशुभकराग्रहं ॥ राजकार्येषु संग्रामे
शुभाशुभपरिकल्पते ॥ भस्मरात्रिनिपिंडानि शुक्लरक्ता
निकृष्टमेव च ॥ शुक्लपिराड यदा भुक्ते शुभ भवीति सर्वदा
॥ रक्तपिराड यदा भुक्ते शत्रु प्रवर्गो भवीति ॥ कृष्टपिराड यदा
भुक्ते शत्रु नासो भवीति ॥ ॥ ध्वष्टे जान सस्त्र किमि
धुसा धोते ज्याना व कोरव नके ॥ धुसानलसा शुभम

गलजुघुः शस्त्रनलसा शत्रु प्रवल जुद्ध किंसी नलसा
राजप्रसादलायुष ॥ ॥ हर्न प्रदे सप्त ऽन्या ज्येये ॥ जान
ज्वड ३ कोषनके जाकी नलसा भीड सस्तया नृपि
जुयव ज्वलदु नलसा शुभम गलजुघु ॥ निधन नलसा
व्याघ्रया भयदयुष ॥ ॥ ध्वते जा ज्वड ३ पिंड ज्येये
मौस दुथने हं ज्वाल दुथने जा ह्व गोड दुथने जान

दासा भी मास नलसा मध्येम. हे ग्वातनलसामृत्यु ॥ ॥
॥ ॥ ध्वये पिराड ग्वडा ३ जाकि मास हेवाल ॥ जा
नलसा म्यायू मास नलसा तारोगी जुयु हेवालन
दासा मृत्यु धोते रोगीया स्वये ॥ ॥ हने धाथ सद
प्रया स्वये: पिराड ग्वडा ३ कोरवनके ग्वलडु नलसा
काये जुयु. हरलि नलसा लाच जुयु. हेवा नलसा ग

भसीसियु ॥ ॥ हने अपचार स्वयं मयु स्वये. पिराड
ग्वडा ३ सिद्धि नलसा जसद युव. किसी नलसा जये. भा
तुनलसा मेवया भयेद युव ॥ ॥ ध्वये संग्राम स्वये
पर्वत नलसा. सिद्धि. नदि नलसा मृत्यु जुयु अ सिद्धि
जुयु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ

मोग-चोवे. मन्हेना धनसारे यानाग.

ॐ तुं फुं तुं फुं तुं फुं स्वाहा ॥ धाल १ ध्वमंत्रनं कस्ति जपाव नके प्रचावये मफ
यागुल ॥ ॐ हसफे ५ भये हूँ फट् स्वाहा ॥ धाल १ ध्वमंत्रनं मिरवागालसपु
ये मिरवास्याकया ॥ ॐ हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं फट् २ स्वाहा ॥ धाल १ ध्वमंत्रनं नवाजपाव
नकोहिविका ॥ ॐ श्रीं भमरातव्य हूँ ज स्वाहा १ नहसपोलं मोल स्याफ पु
ये ॥ ॐ मारये रक्त मुरवी कूँ कूँ कूँ मि क्षयं शकरि हूँ फट् स्वाहा ॥ धाल
१ चेकनजपाव घायसमुय किमीनास ध्वमन्त्रनचि जपाव नके. किमीया ॥
इतिसम्यत् १९९५ साल. चैत्रकृष्ण पंचमी रविवार शुभम् —